Vol 6 Issue 10 April 2017 ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

......More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.org

ISSN: 2231-5063 IMPACT FACTOR : 4.6052(UIF) VOLUME - 6 | ISSUE - 10 | APRIL - 2017

GRT GOLDEN RESEARCH THOUGHTS

गाथा गायन की प्रस्तुति में समाहित नाट्य तत्व

हरि ओम सोनी
शोध छात्र बरकरत उल्लाह वि.वि. भोपाल.

प्रस्तावना

गायन के शब्द, स्वर, उसकी ध्वनि का ऊचा–नीचापन उसमें उपयोग किये जाने वाले सहायक वाद्य, उनकी ध्वनि और उसमें से उभरता हुआ दृश्यात्मक बिम्ब, गाथा गायन के साथ उसके अभिनय पक्ष को प्रस्तुत करता है। गायक, गाथाओं का गायन करता रहता है और सुनने वाला श्रोता–दर्शक उसे दृश्यात्मक बिम्बों के साथ चेतना में अंतर्भूत करता जाता है। यह परम्परा हमारे यहां सदियों से, विभिन्न गाथा गायन शैलियों में उपलब्ध रही है। कहानी और प्रदर्शनात्मक कलाओं का संबंध बहुत पुराने समय से हमारी शास्त्रीय और नाट्य परम्पराओं के समय से प्रारंभ होता है। नाट्यकर्म रंगमंच से जुड़ा हुआ विषय है। गाथा गायन भी प्रदर्शनात्मक शैली के अर्न्तगत आती है। दरअसल गाथागायन एवं नाट्य की प्राचीन परम्परा को प्राचीन काल से ही एक साथ विकसित होते देखा जा सकता है।

"गाथा गायन शैली में केवल गायन परम्परा का निर्वाह नहीं होता वल्कि उसमें अभिनय पक्ष एवं नाट्य पक्ष भी समाहित रहता है। गाथा गायन में क्रियात्मक शैली का प्रयोग किया जाता है। इस प्रकार गाथा गायन शैली में गाथा गायक दोहरी भूमिका या फिर कई प्रकार की भूमिका का निर्वाह स्वयं एक साथ करता है।"[1] गाथा गायन की प्रस्तुति के दौरान गायक जो अभिनेता भी होता है, पात्र की अपेक्षा चरित्र होता है, और एक ही पात्र की भूमिका में नहीं बल्कि एक ही समय में दो–तीन या अधिक पात्रों की भूमिका भी वही निभा ले जाता है। गायन के साथ मुख्य अभिनय एवं उसे निर्देशित करने का कार्य भी स्वयं गाथा गायक करता है।

यद्धपि इस प्रकार का अभिनय पक्ष समस्त प्रकार की गाथाओं में देखने को नहीं मिलता है। नाट्य तत्व उन गाथाओं में ज्यादा देखने को मिलता है जिनकी प्रस्तुति मंच से होती है जैसे आल्हा एवं पांडवानी।

इस प्रकार प्राचीन समय की गाथागायन या वाचन परम्परा या वर्तमान काल की गायन परम्परा से आगे निकलकर यह गेय विधा, गायक द्वारा मंचित होती है, जहां वह गाथा का गायन ही नहीं करता, अपितु उसके साथ–साथ अभिनय, भावाभिव्यंजना व अभिनय की तकनीकी युक्तियों की सहायता से गाथा को उसके पात्रों के द्वारा मंच पर जीता है।

इस तरह एक गायन विधा को प्रदर्शनात्मक विधा की तरह मंच पर कहानी के रूप में गाथाओं के द्वारा मंचन किया जाता है। जिसमें रंगमंच की तकनीकों के प्रयोग करते हुए शब्द की दृश्यात्मकता एवं संगीत के प्रयोग द्वारा ही गाथा को मंच पर प्रस्तुत किया जाता है। चूँकि गाथा गायन शैली मूलतः गायन शैली है। अतः इसमें एक ही मुख्य गायक होता है, अन्य सहायक गायक हो सकते हैं, जो कोरस के रूप में गीत को दोहराने का कार्य करते हैं। परन्तु इनकी उपस्थिति अनिवार्य नहीं होती। एक ही व्यक्ति द्वारा गायन के साथ अभिनय भी किया जाता है। जिसमें एक ही व्यक्ति विभिन्न पात्रों की भूमिका का निर्वाह स्वयं करता है ऐसी स्थिति में गाथा गायन की प्रस्तुति बहुत ही आनंद दायक होती है। अभिनेता पूरी सहजता, लेकिन चतुराई से विभिन्न पात्रों को अलग–अलग स्वर व भाव भंगिमा में प्रस्तुत करता है। वह प्रथम पुरुष में तो बोल ही लेता है, द्वितीय पुरुष व तृतीय पुरुष की भूमिका भी उसे ही निभानी होती है।

चरित्रों का आपसी संबंध, वार्तालाप इत्यादि के द्वारा गाथा गायन की प्रस्तुत किया जाता है। इसमें दर्शक को ऐसा प्रतीत होता है कि वह उस चरित्र को या उस काल की घटना को अपने सामने उसी प्रेक्षाग्रह में देख रहा हो।

गायक बारी–बारी से एक–एक चरित्र में प्रवेश करता है और बाहर आता है। वह उन दो अन्य पुरुषों का वाचन भी सहजता से भिन्न स्वर–लहजे और विविध देहभाषा के साथ करता है जिससे एक ही समय में विभिन्न छवियां ध्वनित होती है यह सम्पूर्ण आभास दर्शक को एक ही पात्र की उपस्थिति में होता है।

गाथा गायन करते हुए गाथा गायक बीच–बीच में वाचिक अभिनय करता हुआ अपने वार्तालाप (डायलाग) द्वारा वैसे ही वातावरण का निर्माण करता है जैसा कि संबंधित गाथा में उस समय हुआ होगा। उदा. 'अरे भैया तूने मेरे कपड़े फाड़ डाले अब क्या मेरा खून पियेगा 'हां' (जोरदार आवाज में) हां मैं तेरा खून पियूंगा। इस प्रकार गाथा गायक उस गायन के दौरान उस पात्र में इस प्रकार ढल जाता है कि मानो वह पात्र सामने खड़ा हो और वह उसे जीवंत कर देता है। इस प्रकार से गायक उस पात्र को दर्शकों–श्रोतागण के समक्ष पूरी तरह से महिमामंडित कर प्रस्तुत करता है और दर्शकों का मन मोह लेता है। इस प्रकार गाथा गायक दर्शकों को अपने से एक क्षण के लिए भी दूर नहीं होने देता।

प्रत्येक दृश्य में गाथा गायक एक अभिनेता के रूप में होता है और संगीत के प्रयोग द्वारा आवाज एवं स्वर के उतार चढ़ाव द्वारा हर बार एक नये

पात्र का रूप धारण कर लेता है। इस तरह गाथा गायक उस चरित्र की व्याख्या गायन, वादन नृत्य एवं अभिनय के माध्यम से करता है। गाथा गायन में वाचिक, आंगिक अभियन के द्वारा क्रोध, दया, करूणा, प्रेम, सहानुभुति इत्यादि अनेक प्रकार के भाव प्रकट किये जाते है। ये सभी गुण गाथा गायक में पाये जाते हैं।

गाथा गायक इसके साथ–साथ अनेक सांकेतिक दृश्यों का भी सहारा लेता है जैसे बिजली का तड़कना, पानी का गिरना, युद्ध के समय घोड़ों का दौड़ना, तलवारों का चलना, गदाओं का चलना इन सब संकेतों को संगीत के साथ अभिनय के रूप में प्रस्तुत किया जाता है और दर्शक वास्तविक चित्र का अनुमान लगा लेता है।

"गाथाऐं घटना प्रधान होती हैं, एवं व्यक्तिगत होती हैं। इनमें वार्तालाप भी होता है जो कथा गेय होती है, उसमे किसी एक व्यक्ति का सांगोपांग जीवन चित्रित होता है। इसमें कथा विषेष होती है।"[2]

स्वर, लय, ताल, शब्द एवं ध्वनि की विविधता और उससे उत्पन्न दृश्य इन सब के सम्मिलित प्रभाव से 'गाथा गायन' की सृष्टि होती है, क्योंकि कहानी या कथा या तो पाठ्य होगी या गेय अर्थात् या तो वह गद्य होगा या पद्य और वे भूतकाल में घटित हो चुकीं घटनाऐं है और वे पूर्णतः क्रियात्मक भी हैं। "गाथा गायन संगीत प्रधान होता है। यह गायन अपने आप में कोई दृश्य नहीं बनाता। जब यही गायन मंच पर गायक द्वारा रंगमंच के सम्मिलित प्रभाव से प्रस्तुत किया जाता है तो वह अतीत और वर्तमान की घटना को उस समय दर्शक के समक्ष, आपबीती के रूप में ही रख रहा होता है, मानो वह घटना उसके साथ उसी समय घटित हो रही है जिसे वह करके दिखाता है। संगीत की भाषा में इसे क्रियात्मक पक्ष कहतें है।"[3]

गाथा गायन की प्रस्तुति में सांगीतिक तत्वों के साथ–साथ प्रस्तुति के अन्य उपकरण जैसे मंच सज्जा, प्रकाश, वेशभूषा, मेकअप, ध्वनि विस्तारक यंत्र इत्यादी का भी उतना ही महत्व होता है जितना महत्व नाट्य अभिनय में होता है। यह सभी तत्व गाथा गायन की प्रस्तुति में महत्वपूर्ण योगदान देते है। गाथा गायन की प्रस्तुति में मूल गाथा गायन के पूर्व एवं पश्चात् देवताओं का आह्वान, वंदना, सतुति की परंपरा पाई जाती है जिनमें देव गणों, गणेश जी एवं सरस्वती जी आराधना की जाती है।

भारत वर्ष में गाथा गायन का क्षेत्र प्राचीन काल से ही पर्याप्त समृद्ध रहा है। मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ में तीजन बाई की 'पंडवानी' 'आल्हा गायन', लखनऊ में 'परशुरामी' में गाथाओं पर आधारित प्रसंग है जोकि गाथा गायन के सुदूर परम्परागत उदाहरण हैं, जिसके मूल में कथा है तो प्रदर्शन में गायन के साथ–साथ अभिनय व गीत–संगीत भी शामिल हैं। हम देख सकते हैं कि प्रदर्शनात्मक कलाओं का प्रारंभ कथा में अभिनय का तत्व, नृत्य की गति और संगीत के सुर जुड़ जाने से ही हुआ है। संत कवियों के पद–गायन में भी गाथागायन की परम्परा देखी जा सकती है, जिसमें वे स्वयं अपने पदों को रागिनियों में ढालकर जनमानस में प्रसारित करते थे। जिनका नाट्य रूपान्तरण करके कहानी का ज्यों का त्यों मंचन देखा जा सकता है कहानी को मंचित होते देखा जा सकता है।

"गाथा गायन की प्रस्तुति के समय कई महत्वपूर्ण तत्व होते हैं जिनका प्रयोग रंगमंच में किया जाता है कहानी की रंगभाषा, रंगप्रयोग, सब ऐसे होने चाहिए जो कहानी के कलेवर को, यानी सशरीर आत्मा को प्रवाहित करते हुए दर्शकों तक पहुंचा सकें। गाथा गायन की मूल कथा में, किसी पंक्ति में परिवर्तन करके इस प्रयोग को साधने की कोशिश अपेक्षित नहीं है। ऐसा तो कहानी के नाट्य रूपान्तरण में होता है। गाथा गायन करते समय कुछ पंक्तियां आगे पीछे की जा सकती हैं, कई पक्तियों को दोहराते हुए भी चलते है। किसी कथा में भूतकाल में गुजरे किसी अनुभव को पात्र पर बीतने वाले उसके प्रभाव के साथ दर्शकों तक पहुंचाया जाता है।"[4] इस प्रकार से गाथा गायन में गायन पक्ष के साथ–साथ संगीत का प्रयोग करते हुए रंगमंच की युक्तियों का प्रयोग भी किया जाता है इस अतः गाथा गायन में नाट्य तत्व पूर्णतः समाहित रहता है। तथापि नाट्य तत्व की प्रतिशतता प्रत्येक गाथा शैली में अलग–अलग होती है कई गाथाओं में केवल गायन पक्ष प्रबल होता है तो किसी गाथा शैली में नाट्य।

संदर्भ सूची –

1 डॉ राजेन्द्र कुमार ए.एस.डी आकाशवाणी भोपाल
2 गुप्ता डॉ. सत्या खड़ी बोली का लोक साहित्य पृ. 249
3 पं. रामस्वरूप रतोनिया वरि. संगीतज्ञ भोपाल
4 श्री अवधेष प्रताप सिंह तोमर सहा. प्रा. सागर

हरि ओम सोनी
शोध छात्र बरकरत उल्लाह वि.वि. भोपाल.

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- ✶ International Scientific Journal Consortium
- ✶ OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.org